आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2015-2017

मासिक पत्रिका

अजायब ✵ बानी

वर्ष : चौदहवां | अंक : नौंवां | जनवरी–2017

4
आवश्यक सूचना

5
नया साल-नया मनुष्य जन्म

11
यह दुनिया विषय-विकारों का जंगल है

21
सवाल-जवाब

31
भक्ति का तोहफा

34
धन्य अजायब

संपादक–**प्रेम प्रकाश छाबड़ा**
99 50 55 66 71 (राजस्थान)
98 71 50 19 99 (दिल्ली)

उप संपादक–**नन्दनी**
सहयोग–**परमजीत सिंह**

विशेष सलाहकार–**गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04
99 28 92 53 04

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

Website : www.ajaibbani.org	e-mail : dhanajaibs@gmail.com

प्रकाशन दिनांक 1 जनवरी 2017 –178– मूल्य – पाँच रुपये

मासिक पत्रिका प्राप्त करने के लिए आवश्यक सूचना

गुरु प्यारी साध संगत,

बाबा जी के नाम पर आप सबको नये साल की शुभकामनाएं।

बाबा जी की अपार दया से सन् 2003 से हिन्दी मासिक पत्रिका **अजायब बानी** का प्रकाशन हो रहा है, जिससे हम सब लाभ उठा रहे हैं।

जो प्रेमी यह पत्रिका डाक द्वारा प्राप्त कर रहे हैं उनसे प्रार्थना की जाती है कि वे सूचित करेंगे कि उन्हें पत्रिका हर माह समय पर मिल रही है, उनका पता ठीक है? आप यह सूचना इस तरह दे सकते हैं:

1. आप फोन न.– 99 50 55 66 71 पर बात करके सूचित कर सकते हैं या whatsapp कर सकते हैं।

2. आप फोन न.– 98 71 50 19 99 पर sms कर सकते हैं।

3 आप dhanajaibs@gmail.com पर mail कर सकते हैं।

4 आप सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335039 जिला श्री गंगानगर(राजस्थान) पर पत्र लिखकर भी सूचित कर सकते हैं।

सूचित करते समय कृपया अपना SN# अवश्य बताएं। आपका SN# लिफाफे के दाँई तरफ लिखा हुआ है। यह पत्रिका हर माह की एक तारीख को श्री गंगानगर से डाक द्वारा भेजी जाती है।

अगर आपकी तरफ से कोई सूचना नहीं मिलती तो यह समझा जाएगा कि आपको डाक प्राप्त नहीं हो रही। डाक जारी रखने के लिए आवश्यक है कि आप सूचित करें।

धन्यवाद

आपके आभारी

प्रेम प्रकाश छाबड़ा

फोन – 99 50 55 66 71

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा नये साल का संदेश

नया साल–नया मनुष्य जन्म

16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

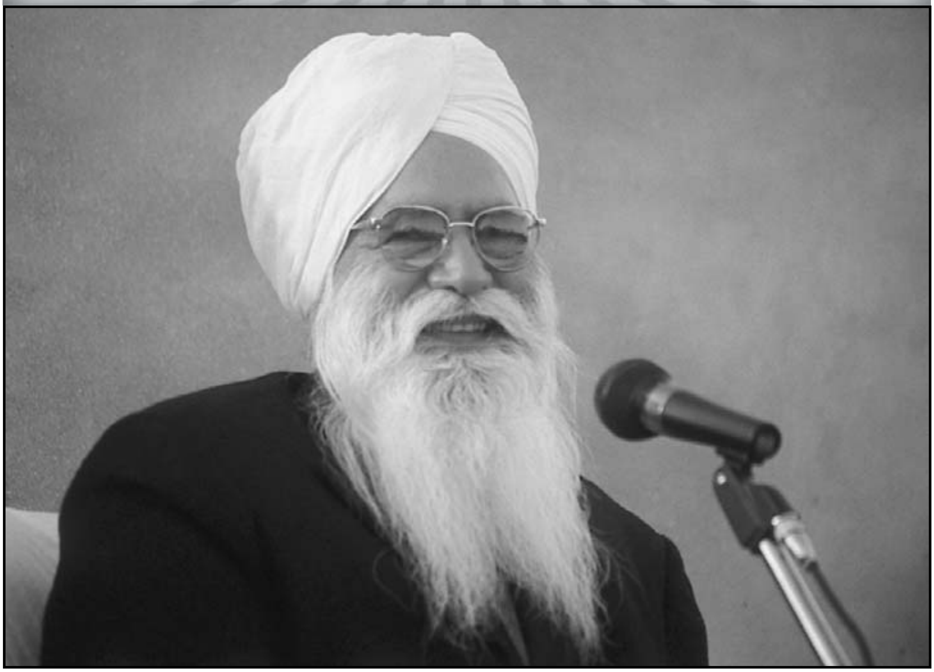

हुजूर सावन और कृपाल के नाम में आप सबको नये साल की शुभकामनाएं। मैं आशा करता हूँ कि यह नया साल आप सबके लिए खुशियां लेकर आए और आप नये साल में ज्यादा से ज्यादा भजन-सिमरन कर सकें।

आज के दिन हिन्दुस्तान में बहुत से समाज सुबह तीन बजे दरिया, तालाब या नहर पर जाकर स्नान करने को बहुत ही पुण्य समझते हैं। आज के दिन बहुत से लोग अपनी-अपनी बोली में प्रभु को याद करते हैं लेकिन हमारे ऊँचे भाग्य हैं कि हमें प्रभु के साथ जुड़ने का मौका बख्शा गया है।

जब से इंसान बना है तब से ही यह परंपरा चली आ रही है कि प्रभु हमारे अंदर है। आप उस तीर्थ में जाकर स्नान करें जहाँ जन्मों-जन्मों की मैल उतरती है। वह तीर्थ हमारे शरीर के अंदर दसवें द्वार में है। सन्त हमेशा उस तीर्थ की महिमा गाते हैं। जब हम अपनी आत्मा के ऊपर से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतार लेते हैं तब आत्मा वहाँ स्नान करती है। सन्तों ने वहाँ के स्नान का महत्त्व बताया है लेकिन हम बाहर के रीति-रिवाजों में लग गए हैं। वही शिष्य है, वही सन्त है जो सुबह उठकर दसवें द्वार में पहुँचकर स्नान करे। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुरु सतगुरु का जो सिख अखाए, सो भलके उठ हर नाम ध्यावे।
उद्यम करे भलके प्रभाती, स्नान करे अमृतसर न्हावे।।

महात्मा कहते हैं, ''हम पढ़-पढ़ाई से, दुनिया के किसी कर्मकांड या रीति-रिवाज से वहाँ नहीं पहुँच सकते, यह सिर्फ जुबानी जमा खर्च है इससे ज्यादा कुछ नहीं होता।''

कबीर साहब कहते हैं, ''आप काले कंबल पर चाहे सौ मण साबुन लगा लें काला कंबल उजला नहीं हो सकता।'' मनमुख को काला कंबल या कौवा कहा गया है। कौवे की खुराक गंदगी और हंस की खुराक मोती है। गुरुमुख की खुराक नाम जपना और प्रभु के साथ जुड़ना है। जो गुरुमुख के संपर्क में आता है गुरुमुख उसे भी प्रभु के साथ जोड़ देते हैं।

ऋषियों-मुनियों ने मेहनत की, कमाई की पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड में गए। उन्होंने जो कुछ अपने अंदर देखा उसे धर्म पुस्तकों में दर्ज कर दिया। जिस तरह बाहर तीन नदियाँ गंगा, यमुना और सरस्वती इकट्ठी होती हैं; जहाँ इनका संगम होता है वहाँ स्नान करने को लोग बहुत पवित्र समझते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

तीन नदी त्रिकुटी मांही।

आप पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड में जाएं आपको ये तीनों नदियाँ अंदर भी मिलेंगी। इसमें स्नान करने से आपकी जन्मों-जन्मों से सोई हुई आत्मा जाग जाएगी पवित्र हो जाएगी। मनमुख की गति छोड़कर गुरुमुख की गति को प्राप्त करने की कोशिश करेगी। गुरु अमरदेव जी ने अंदर सच्चा अमृतसर देखकर अपनी बानी में लिखाः

सच्चा अमृतसर काया माहे मन भीवे पाहे सो पाहे हे।

गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं, ''आपके अंदर जो अमृतसर है आप उसमें जाकर स्नान करें।'' बाहर जो अमृतसर है हम उसकी बहुत इज्जत करते हैं। गुरु रामदास जी ने इसकी नींव डाली थी और इसे पाँचवे गुरु अर्जुनदेव जी ने पूरा किया था।

जब गुरु रामदास जी महाराज इसकी नींव रखने लगे तब उन्होंने मिस्त्री से कहा, ''प्यारेया! हम यहाँ दसवें द्वार के कमल की शक्ल का मंदिर बनाएंगे ताकि लोगों के दिलों में यह चाव पैदा हो कि हम अंदर के कमल में जाकर स्नान करें और आत्मा के जन्म-जन्मांतर के बुरे कर्म धुल जाएं; लोगों के अंदर उत्साह पैदा होगा।'' वह मिस्त्री कभी अंदर नहीं गया था। वह किस तरह दसवें द्वार के कमल की नकल बना सकता था? मिस्त्री ने कहा, ''मैं मजबूर हूँ मैंने वह कमल नहीं देखा।'' गुरु रामदास ने मिस्त्री को भजन में बिठाया अपनी तवज्जो दी और उसकी सुरत अंदर ले गए।

किसी चीज को अंदर देखकर बाहर उसकी नकल बना लेनी आसान होती है। गुरु रामदास जी ने तवज्जो देकर मिस्त्री की सुरत उतारी और उससे पूछा, ''क्यों भई! अब तो बना लेगा?'' मिस्त्री ने कहा, ''महाराज जी! मुझे वहीं रहने दें।'' गुरु रामदास जी ने कहा, ''पहले तू बाहर बना फिर तुझे इसी जगह ले आएंगे।''

प्यारेयो! महात्मा हमारे लिए धर्मग्रंथों में जो हिदायतें देकर गए हैं हमारा भी फर्ज बनता है कि हम उन हिदायतों पर चलें जैसे उन्होंने अपने गुरुओं के पास जाकर नामदान प्राप्त किया, मेहनत की हम भी उसी तरह करें तो कामयाब हो सकते हैं।

हम अपने शुभचिंतकों, रिश्तेदारों और यारों-दोस्तों को हर बार नये साल की शुभकामनाएं देते हैं। अगर कोई दूर रहता है तो हम उसको पत्रों के जरिए लिखकर भेज देते हैं कि आपको नया साल मुबारक हो। सन्त-महात्मा जब भी इस संसार में आते हैं वे बहुत प्यार से अपनी आत्माओं को, अपने बच्चों को संदेश देते हैं कि **नया साल नया मनुष्य जन्म** है। वे हमें यही मुबारक संदेश देते हैं कि पिछले सालों में आपने सुरत-शब्द का अभ्यास नहीं किया, अब आप अभ्यास करें और इस जिंदगी को सफल बनाएं।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज अपनी आत्माओं को संदेश देते हुए कहते हैं कि मनुष्य जन्म आपको एक नया जामा मिला है।

माघ मज्जन संग साधुआं धूड़ी कर स्नान।
हर का नाम ध्याए सो सबना लोक निदान।
जन्म कर्म मल उतरे अन्ते जाए गुमान।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ने दुनिया को बंदर की तरह नचा रखा है। दिन-रात लोभ का कुत्ता भौंक रहा है। सच्चे मार्ग 'शब्द-नाम' की कमाई करने से ये सारे डाकु शान्त हो जाएंगे फिर क्या होगा? *उस्तत करे जहान*। जो सारी दुनिया को अपनी समझता है भगवान भी उसे अपना समझता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

अपने जीव की दया पा लो चौरासी का फेर बचा लो।

जब हम भजन-सिमरन करते हैं तो किसी पर कोई एहसान नहीं कर रहे होते, यह तो हम अपने ऊपर दया कर रहे होते हैं। जो अपने ऊपर दया करता है वह दूसरों पर भी दया कर सकता है।

महाराज कृपाल सिंह जी ने हमें डायरी रखने की हिदायत दी कि आप हर महीने अपना लेखा-जोखा करें कि आपने इस महीने में कितने पाप किए? किसी की कितनी निन्दा की? किसी के पैसे का कितना नुकसान किया या फायदा किया? कितना भजन-सिमरन किया? हम महीने के शुरू में अंदर क्या देखते थे और महीने के अंत में जाकर हमने आगे तरक्की की या नीचे गए?

मैं आप सबको मुबारक देते हुए यही कहूँगा कि आप लोग अपना जीवन उस डायरी के मुताबिक ही बना लें। रोजाना डायरी को बहुत ईमानदारी से गुरु को सामने रखकर भरें, मन का कोई लिहाज न करें। जो गलती एक दिन हो जाती है उसे दूसरे दिन न दोहराया जाए। आप साल भर का लेखा-जोखा बनाएं कि हमने इस साल भजन-सिमरन में कितनी तरक्की की या हम कितना नीचे गए? नीचे गए तो क्यों गए? तरक्की की तो किस कारण हम ज्यादा भजन-सिमरन करके अंदर तरक्की कर सके।

प्रभु ने अपनी खास दया करके हम जीवों को सब योनियों से ऊपर चौरासी लाख योनियों का सरदार इंसान की ऊँची योनि दी है। गुरु ने हमें अपनी बहुत भारी दया करके नाम का तोहफा दिया है। अब हमारा फर्ज बनता है कि हम इस जीवन को पवित्र बनाएं शब्द-नाम की कमाई करें।

***

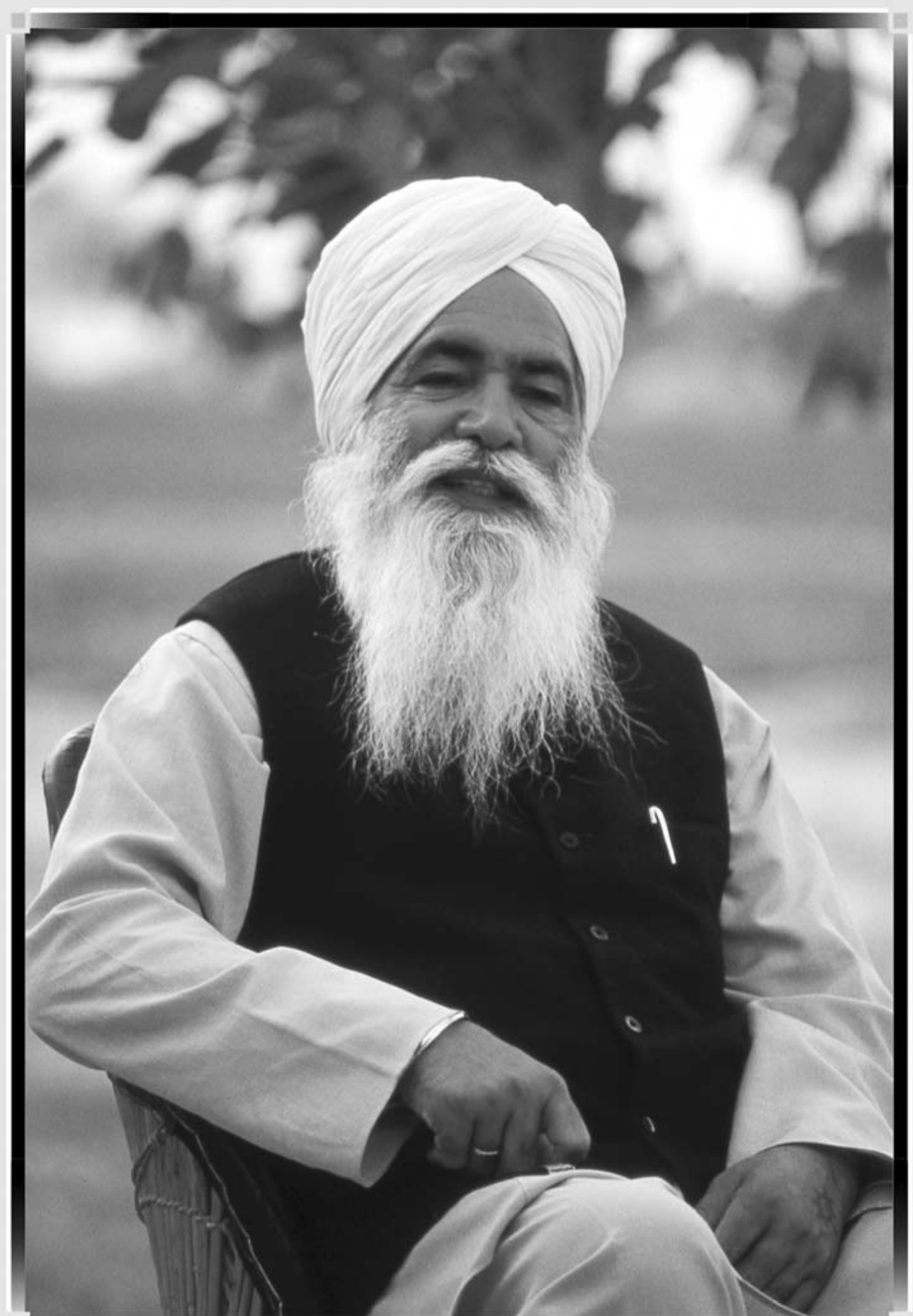

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

यह दुनिया विषय–विकारों का जंगल है

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी DVD-550 इटली

मैं अपने परम गुरु परमात्मा सावन–कृपाल का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने फिर मुझे आपके देश में आपकी सेवा के लिए हाजिर किया है। सेवक की डोर गुरु के हाथ में होती है। सेवक पुतली की तरह होता है, नट जो खेल खिलाता है पुतली वही खेल खेलती है। आप एक भजन में पढ़ते हैं:

जित्थे भेजे दाता जांवां, तेरा दित्ता सदा ही खांवां।
मैं हां पुतली, तेरे हत्थ डोर दातेया।।

सन्तमत एक सच्चाई है यह कुदरत के नियमों के मुताबिक है। मैं बताया करता हूँ कि सन्तमत करनी का मत है बातों का मत नहीं। जिसने कमाई की सन्तों की कृपा से अंदर गया वह आज तक इसे झुठला नहीं सका, वह उन्हीं का हो गया। अभ्यास में कामयाब होने के लिए अभ्यासी को कुछ शर्तें अवश्य पूरी करनी पड़ती हैं, अपनी पदवी का मान त्यागना पड़ता है। कई बार हमें यारों दोस्तों और सामाजिक लोगों के ताने–मेहणों का सामना करना पड़ता है। निन्दा–चुगली भक्ति के दर की कोतवाल होती है। दुनिया की मान–बड़ाई प्रभु के प्यारों की खुशी का कारण नहीं बनती जो लोग उनका निरादर करते हैं वे उनकी तरफ भी तवज्जो नहीं देते और बीच का रास्ता इख्तियार कर लेते हैं।

दुनिया को दुखों और कष्टों में घिरा हुआ देखकर प्रभु दया करता है, उसके प्यार का समुंद्र उछल पड़ता है। वह खुद ही

रूप धारण करके संसार में आता है। दुनिया के सिर पर दुख और चिन्ता का बोझ है दुनिया उस बोझ के नीचे दबकर अपने आपको भूल चुकी है। हम जीव इन्द्रियों के भोगों में बुरी तरह फँस गए हैं; जितने भोग उतनी ज्यादा बीमारियां होती हैं।

हमने सुखों के समुंद्र नाम की तरफ से पीठ की हुई है। हम जहर भी खा रहे हैं और हाय–हाय भी कर रहे हैं। क्षण–भंगुर काम की लहर और क्षण भंगुर दुनिया के सुख हमें दुखों की नदी में बहाकर ले जाते हैं। जवान सुखों के स्वपन लेता–लेता बूढ़ा हो जाता है। दुनिया की बड़ी तलाश करता है बड़े सामान बनाता है कि मुझे इनमें सुख–शान्ति मिले, लेकिन जितना ज्यादा सामान इकट्ठा करते हैं उससे चिन्ता और दुख पैदा हो जाते हैं।

सन्त–महात्मा हमें सिर्फ उपदेश ही नहीं करते बल्कि हम भूले बच्चों को जगाने के लिए आते हैं क्योंकि हम गफलत की नींद में सोए हुए हैं। आपके आगे गुरु अर्जुनदेव जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है। आपने जैसी दुनिया की तस्वीर देखी उसे दर्द भरे लहजे में वैसा ही बयान किया है। महात्मा न तो किसी खास फैमिली के लिए आते हैं न किसी खास समाज या मुल्क के लिए आते हैं, उनका इन चीजों के साथ कोई लगाव नहीं होता। वे सारे संसार को अपना घर समझते हैं। उनका हर मुल्क, हर समाज और हर कौम के साथ एक समान प्यार होता है।

महात्मा की बानी किसी खास समय के लिए नहीं होती वह हर समय पर सही लागू होती है। हम समझदारी से ही उस बानी से फायदा उठा सकते हैं। हर महात्मा ने नाम की महिमा की है

और प्रभु प्राप्ति के फायदे बताए हैं। जो गुरु शब्द में समा जाता है शब्द रूप हो जाता है उसके प्यार के गीत गाए हैं।

महात्मा जब तक संसार में होते हैं लोग उनके उपदेश का सही फायदा उठाते हैं लेकिन जब वे संसार से चले जाते हैं फिर उनके ही अनुयायी जो अंदर नहीं जाते वहाँ रीति–रिवाज शुरू कर देते हैं, अपने मतलब की खातिर उनकी तालीम को गलत ढ़ंग से पेश करते हैं। आप सोचकर देखें! आँखों वाले ने हाथी देखा होता है वह कभी भी अंधे की बातों पर ऐतबार नहीं करता अगर करेगा तो वह भटक जाएगा।

सन्त–महात्माओं की आँखें खुली होती हैं उन्होंने आँखों से प्रभु को देखा होता है वे प्रभु को देखकर सिफत करते हैं। हम मजहब की रंगत देने वाले सामाजिक लोगों ने परमात्मा को देखा नहीं होता, हम परमात्मा से मिले नहीं होते। हम लोगों की शादियों के तो गीत गाते हैं लेकिन अपनी शादी नहीं करवाई होती हम कहते हैं कि हमारी कौम में ऐसा भक्त हुआ है। हमें चाहिए कि हम अंदर जाएं जो उनकी बानी में लिखा है वह तजुर्बा खुद करें।

बिखै बन फीका त्याग री सखिऐ नाम महारस पीओ।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज इस दुनिया की तस्वीर खींचकर हमारे आगे रखते हैं कि **यह दुनिया विषय–विकारों का जंगल है**। पहले तो हमें क्षण–भंगुर के लिए इसके रस मीठे लगते हैं लेकिन बाद में हम सारी जिंदगी इनका कड़वा स्वाद चखते हैं, दुखी होते हैं। हमारी आत्मा मन–इन्द्रियों के कहने पर विषय–विकारों के जंगल में भटक चुकी है। गुरु रविदास जी कहते हैं:

मृग मीन भृंग पतंग एक दोष विनाश।
पंच दोष असाध जामें ताकी केतक आस।।

हाथी के अंदर काम का दोष है। जिन्होंने हाथी को पकड़ना होता है वे लोग गहरा खड्डा खोदकर वहाँ कागज की हथिनी बनाकर खड़ी कर देते हैं। हाथी में सब्र नहीं होता काम का जोश होता है, हाथी खड्डे में गिर जाता है। वे लोग हाथी को कई दिन उस गहरे खड्डे में भूखा रखते हैं। जब हाथी कमजोर हो जाता है तो वे लोग उसे पकड़ लेते हैं। इतनी ताकत के जानवर को अंकुश मारकर सीधा कर लेते हैं फिर हाथी बोझ ढ़ोता फिरता है। हाथी के अंदर एक काम की कमजोरी थी। एक क्षण–भंगुर स्वाद की खातिर इतना बड़ा जानवर कैद हो गया।

मैं बताया करता हूँ कि काम का जोश इंसान को अंधा कर देता है, पागल कर देता है उसे पास खड़ा हुआ आदमी भी दिखाई नहीं देता। कबीर साहब कहते हैं कि कामी बेशर्म होता है, कामी भक्ति नहीं कर सकता। जिस आत्मा ने रूहानी मंडल पर चढ़ना है वह काम की वजह से नीचे गिर जाती है।

मृग सबने देखा है यह कितना शक्तिशाली होता है, कूदता फिरता है लम्बी–लम्बी छलांगे लगाता है। मृग को कानों का दोष है। शिकारी लोग जंगल में जाकर एक बाजा बजाते हैं जिसे कंडाहेड़ी का शब्द भी कहते हैं। मृग उस राग को सुनकर मस्त हो जाता है, भूल जाता है कि मेरी मौत इनके हाथ में है; वह अपने चस्के की वजह से उनके बाजे पर अपना सिर रख देता है। कानों के विषय ने मृग की जान ले ली, उसे हांडियों में चढ़ना पड़ा।

मगरमच्छ बहुत ताकतवर जानवर होता है, उसे खाने का चस्का होता है। शिकारी लोग उसे पकड़ने के लिए कुंडी में गोश्त लगाकर कुंडी को पानी में डाल देते हैं। उसमें सब्र नहीं होता वह जुबान के चस्के की वजह से कुंडी को अपने गले में फँसा लेता है। शिकारी कुंडी को खींच लेते हैं उसे कीमा–कीमा होकर हांडियों में चढ़ना पड़ता है।

पतंगे को आँखों का विषय है, वह देखने का आशिक है। दूर नजदीक कहीं भी लाईट जलती हो तो वह वहाँ जाकर अपने आपको खत्म कर लेता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पाँच डाकु हैं और आत्मा अकेली है। हम घर में सोए हुए हैं, ये डाकु घर में घुसकर घर को उजाड़ने में लगे हुए हैं। इन डाकुओं से माता–पिता, बहन–भाई कोई समाज या पढ़–पढ़ाई नहीं बचा सकता। आप कहते हैं:

साध संग ओह दुष्ट वस होते।

साधु के पास जाकर भी वही इन्हें वश में कर सकते हैं जो यह कहते हैं कि अब हम कानों को हाथ लगाते हैं, हम मुड़कर भी इस जहर को नहीं चखेंगे; सन्त हमेशा ही मदद करते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर बच्चा मेहनत से दिल लगाकर पढ़ता है तो टीचर भी उसकी तरफ तवज्जो देता है।'' यह मसला कमाई का है अभ्यास का है। हम अभ्यास में तभी तरक्की कर सकते हैं जब हमें अपने सन्त–सतगुरु से प्यार है उन पर पूरा भरोसा है। प्यार जितना ज्यादा होगा हम अंदर जाकर उतनी ही तरक्की करते हैं। तुलसी साहब कहते हैं:

काम क्रोध लोभ मोह अहंकार की जब लग घट में खान।
क्या पंडित क्या मूर्खा दोनों एक समान।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि **यह दुनिया विषय–विकारों का जंगल है**। यहाँ से जितनी जल्दी बचकर भाग सकते हैं भाग जाएं, भागकर गुरु के किले के अंदर छिप जाएं। उस किले की दीवारें संतोष, धीरज, विवेक और वैराग की हैं। सन्त–सतगुरु हमें नाम के समय जो बैठक बताते है, आप तीसरे तिल पर जाकर बैठक बना लें।

बिन रास चाखे बुड़ गई सगली सुखी न होवत जीओ।

रस एक ही आएगा चाहे दुनिया के विषय विकारों का रस ले लें चाहे नाम का रस ले लें। दोनों वस्तुएं आपके अंदर हैं। दवाई भी अंदर है और बीमारी भी अंदर है लेकिन नाम का रस पिए बिना अनेकों आए और अनेकों ही चले गए, कोई सुखी नहीं हुआ। हमने नाम के बिना सुखों के सोमें की तरफ से पीठ की हुई है; कोई सुखी नहीं हुआ किसी को शान्ति नहीं मिली।

मान महत न सकति ही काई साधा दासी थीओ।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''किस चीज का अभिमान करते हो? धन–दौलत और पदवी का मान छोड़ दें इन्होंने हमारी मदद नहीं करनी, किसी ने भी हमारे साथ नहीं जाना। यह सब छोड़कर साधुओं के पास जाकर नाम की कमाई करें।''

नानक से दर सोभावंते जो प्रभ अपनै कीओ।

मैंने ऊपर जिन चीजों का जिक्र किया है ये चीजें हमें परमात्मा से दूर करती हैं। जब हम इनकी तरफ से मुँह मोड़कर

नाम के सोमे की तरफ मुँह कर लेते हैं तब प्रभु हमें शोभा देता है इसका ईनाम देता है हमें अपना बना लेता है और अपने घर में जगह देता है। ऐसे महात्मा रब के बंदे बन जाते हैं हरि जन बन जाते हैं। उन्हें पूरा विश्वास होता है कि प्रभु के हुक्म के बिना पत्ता तक नहीं हिलता जो कुछ सुख–दुख है सब उसका ही है।

गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैं, ''वे बड़ाई और निन्दा को कोई मान नहीं देते, सोने और मिट्टी को बराबर समझते हैं। वे मान–अभिमान को एक जैसा समझते हैं। ऐसे महात्मा जीते जी भगवान की मूरत होते हैं, उनमें भगवान ही बोलता है।''

हरचंदौरी चित भ्रम सखीए मृग तृसना द्रुम छाया।

गुरु अर्जुनदेव जी एक और मिसाल देते हैं, ''यह दुनिया झूठी नगरी है। कई बार आसमान में ऐसे दृश्य दिखाई देते हैं जो मृगतृष्णा है। जिस तरह गर्मियों में मृग को बनावटी पानी दिखाई देता है वह पानी के पीछे भागता है, पानी पीछे हटता जाता है आखिर मृग तड़प–तड़पकर अपनी जान दे देता है।''

चंचल संग न चालती सखीए अंत तज जावत माया।

गुरु अर्जुनदेव जी सच्चाई बयान करते हैं, ''दुनिया और दुनिया के पदार्थों ने साथ नहीं जाना और न ही इन्द्रियों के भोगों ने हमारा साथ देना है। हमने इनका साथ छोड़कर अपने अच्छे–बुरे कर्म लेकर जाना है।''

रस भोगण अति रूप रस माते इन संग सूख न पाया।
धंन धंन हर साध जन सखीए नानक जिनीं नाम ध्याया।।

दुनिया के रसों–कसों में आज तक न किसी ने सुख पाया है और न पा ही सकता है। ऐसे साधु–महात्मा धन्य हैं, पूजा के काबिल हैं जो इंसानी जामा पाकर प्रभु की भक्ति में लग जाते हैं।

जाय बसो वडभागणी सखीए संतां संग समाईऐ।
तह दूख न भूख न रोग ब्यापै चरन कमल लिव लाईऐ।।

कौन सी आत्माएं मुबारक हैं किनके बड़े भाग्य हैं? सन्तों की संगत–सोहबत में जाएं वे आपको सच्चखंड लेकर जाएंगे जहाँ मौत पैदाईश नहीं; रोग नहीं सोग नहीं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर आपसे और कुछ नहीं होता तो आप सन्तों के साथ सच्चे दिल से प्यार ही कर लें। जिसके साथ हमारा प्यार होगा अंत समय में हमें वही याद आएगा। आखिर सन्त हमें वहाँ ले जाएंगे जहाँ से वे आए हैं।'' सन्त रविदास जी कहते हैं:

बे गमपुरा शहर का नाम दुख अंधेरा नहीं तेह ठाव।

वहाँ दुख नहीं भूख नहीं रोगों से भरी देह नहीं मिलती। उसे किसी ने सच्चखंड कह दिया तो किसी ने बे गमपुरा कह दिया। वहाँ कोई गम नहीं, वहाँ नाम का ही प्रकाश है।

तह जन्म न मरण न आवण जाणा निहचल सरणी पाईऐ।
प्रेम बिछोह न मोह ब्यापै नानक हर एक ध्याईऐ।।

आप कहते हैं, ''वहाँ जन्म–मरण नहीं मौत–पैदाईश नहीं। वहाँ विछोड़ा नहीं मिलाप नहीं, वहाँ प्यार ही प्यार है। वह प्यार का देश है। वहाँ आत्मा को प्यार की ही खुराक मिलती है।''

दृस्टि धार मन बेधया प्यारे रतड़े सहज सुभाए।
सेज सुहावी संग मिल प्रीतम अनंद मंगल गुण गाए।।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''हम सुनी–सुनाई बातें नहीं कहते हमने अपनी आँखों से सब कुछ देखा है किस तरह आत्मा और परमात्मा का मिलाप होता है। आत्मा को प्रभु की सेज पर जगह मिलती है जैसे कतरा समुंद्र में मिलकर समुंद्र कहलाता है। खंड का पतासा है पतासे की खंड है, पानी में उनकी जाति अलग नहीं रहती। वहाँ पहुँचकर आत्मा भी प्यार रूप हो जाती है।''

सखी सहेली राम रंग राती मन तन इच्छ पुजाए।

आप कहते हैं, ''जब उस प्रीतम ने अपनी सेज पर जगह दी तो खुशी हुई मंगल गाए। वहाँ पहुँची हुई आत्माएं भी आशीषें देने आई उन्होंने भी खुशी के गीत गाए, सब प्रभु के रंग में मस्त थे।''

नानक अचरज अचरज स्यों मिलया कहणा कछू न जाए।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने हमें बड़े प्यार से समझाया है कि **यह दुनिया विषय–विकारों का जंगल है**। यह मृग तृष्णा जल है जो प्यास नहीं बुझाता।

आपने इनसे बचने के लिए साधुओं की संगत और सोहबत का उपदेश दिया है। कतरा समुंद्र में जाकर मिल गया। परमात्मा अचरज है हमारी आत्मा भी अचरज है वहाँ के मिलाप को जुबान बयान नहीं कर सकती। कबीर साहब कहते हैं:

गई पुतली लूण की थाह सिंध की लेण ।
अनाथ आप पाणी भई उलट कहे को बैण।।

21 मई 1989

***

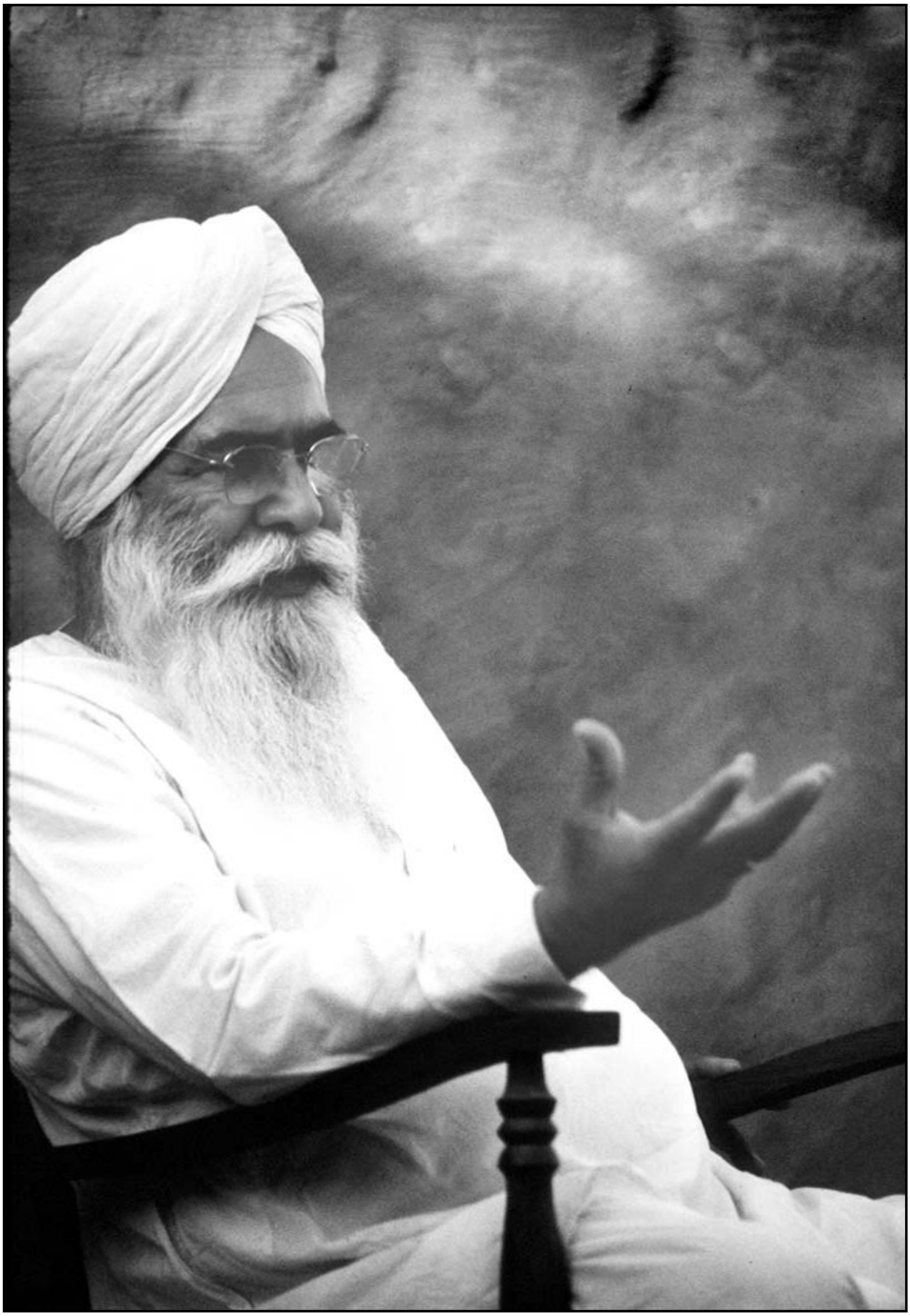

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल–जवाब

एक प्रेमीः- *महाराज जी! सन्त जानी जान होते हैं तो वे किसी नामलेवा से यह क्यों पूछते हैं क्या तुम्हें नाम प्राप्त है?*

बाबा जीः- आपकी बात तो ठीक है। आमतौर पर सन्त अपने गुणों की नुमाईश नहीं करते। वे इस संसार में अंजान की तरह भोली-भाली जिंदगी बिताते हैं। काल का परमात्मा के साथ वायदा हुआ था कि सन्त संसार में आकर अपने गुणों की नुमाईश न करें। मैं जीव को जहाँ जन्म दूं वह वहाँ खुश रहे। किसी को यह भी पता न हो कि मैं पिछले जन्म में कहाँ था? अगर सन्त जीव को लाएं तो जीव से नाम की कमाई करवाकर ही लाएं। सन्त परमात्मा की आज्ञा का पूरा पालन करते हुए अपने गुणों की नुमाईश नहीं करते।

महाराज सावन कहा करते थे, ''कमाई वाले सन्त के लिए किसी अंधे को आँख दे देना, एक टाँग वाले को टाँग दे देना मामूली बात है। उस इलाके के सारे लोग नामदान लेने के लिए तैयार हो जाएंगे क्योंकि दुनिया चमत्कार की भूखी है लेकिन सन्त ऐसा नहीं करते।'' गुरु अर्जुनदेव जी भी कहते हैं:

रिद्धि सिद्धि नामे की दासी।

महाराज सावन कहा करते थे, ''जिस तरह शरीफ आदमी किसी की बुरी कमाई नहीं खाता उसी तरह पूरा महात्मा रिद्धियों-सिद्धियों से काम नहीं लेता, चमत्कार नहीं दिखाता।''

एक प्रेमीः- *सतसंगी जोड़ा जिसमें बीवी नामलेवा नहीं, नाम लेने से पहले उस आदमी ने अपनी बीवी के साथ आम आदमी की तरह भोग वासना की होती है लेकिन जब वह आदमी नाम ले लेता है तो उसके लिए ब्रह्मचर्य का पालन करना जरूरी हो जाता है फिर बाद में उसे मुश्किलें पेश आती हैं क्योंकि उसकी बीवी नामलेवा नहीं तो उसे क्या करना चाहिए?*

बाबा जीः- सच्चाई तो यह है कि चाहे मियां नामलेवा है या बीवी नामलेवा है अगर वे दोनों श्रद्धा और प्यार से भजन-सिमरन करते हैं तो साथी की संगत का उस पर जरूर अच्छा असर पड़ता है वह भी नामलेवा बन जाता है। अगर नामलेवा ही डाँवाडोल है तो दूसरे के ऊपर उसका असर नहीं पड़ता। सतसंगी को हमेशा मजबूत होना चाहिए विषय-विकारों से ऊपर उठना चाहिए। सतसंगी की जिम्मेवारी होती है उसने अपने परिवार का उद्धार करना होता है।

एक प्रेमीः- *महाराज जी! कुछ लोगों को अपने पेशे की वजह से जैसे कि मनोरोगियों के डॉक्टर को मनोरोगियों का ईलाज करने के लिए और लोगों के साथ संपर्क करना पड़ता है तब उन्हें कौन सी सावधानियां बरतनी चाहिए कि ईलाज करते हुए वे उनके कर्म अपने ऊपर न लें।*

बाबा जीः- किसी का ईलाज करना कोई बुरी बात नहीं। किसी के साथ संपर्क करना कोई बुरी बात नहीं। आप हमेशा अपने गुरु के ऊपर भरोसा रखें, ईलाज करते हुए किसी का बुरा न सोचें और बेहतर ईलाज करें।

एक प्रेमीः- *महाराज जी! आपने थोड़े समय पहले जो जवाब दिया था उस बारे में मैं आदर पूर्वक एक सवाल पूछना चाहता हूँ कि सन्त किस हद तक रिद्धि-सिद्धि का इस्तेमाल नहीं करते और उन्हें कब रिद्धि-सिद्धि का इस्तेमाल करना पड़ता है? मैंने एक सतसंग में सुना है कि महाराज कृपाल ने एक बार अपने किसी सेवक की जान बचाने के लिए बंदूक की गोली को रोक दिया था?*

बाबा जीः- बात को समझना चाहिए यह कोई करामात नहीं। मैं कई बार कहा करता हूँ कि गुरु सेवक के लिए अपनी जान भी न्यौछावर कर देता है, यह तो एक मामूली घटना है यह कोई चमत्कार नहीं। महाराज कृपाल ने लोगों के अंदर इस बात का इजहार नहीं किया अगर यह बात बाहर निकली तो किसी प्रेमी या जिसके साथ यह घटना घटी उसने ही इस बात को बाहर निकाला है। उस प्रेमी का सवाल चमत्कार के बारे में था आपने जो सवाल किया है यह दया के बारे में है।

आमतौर पर गुरु और शिष्य के बीच ऐसे वाक्यात होते रहते हैं। गुरु अनेको बार सेवक को जलती हुई आग से बचाता है और अपने ऊपर मामूली सी बीमारी या चोट का बहाना बनाता है। गुरु किसी के सामने अपनी बात जाहिर नहीं करता कि मैंने फलाने प्रेमी का कर्म उठाया है और उस प्रेमी के सामने भी जाहिर नहीं करता कि मैंने तेरे कर्म उठाए हैं।

परमपिता सावन ने मुझसे कहा था, ''तुझे देने वाला तेरे घर आएगा।'' महाराज सावन सिंह जी का बख्शा हुआ एक

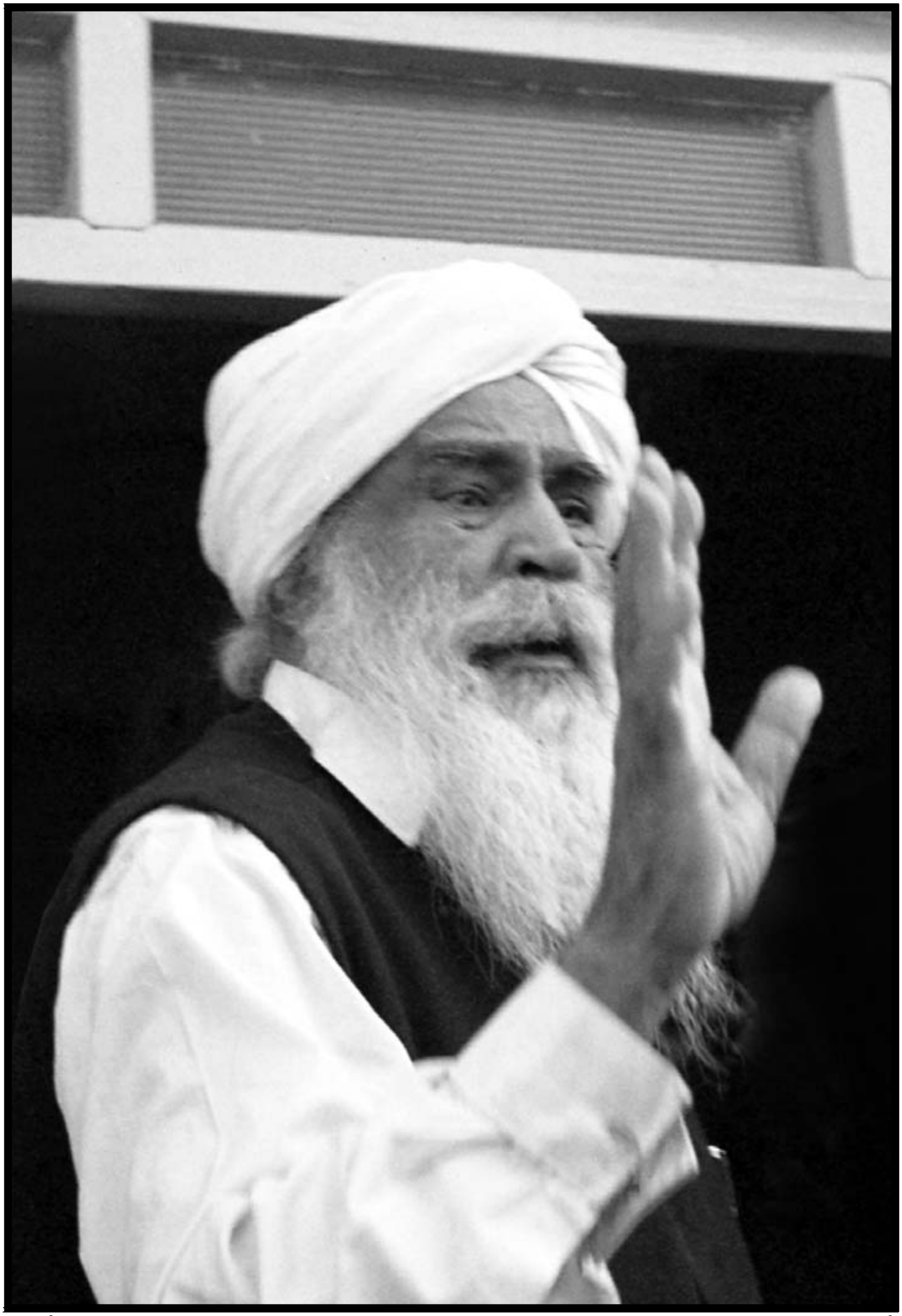

शिष्य बलोचिस्तानी मस्ताना था। मस्ताना जी हमारे बागड़ के इलाके में आमतौर पर आते-जाते रहते थे। मस्ताना जी अच्छी कमाई वाले थे। एक दिन मैंने मस्ताना जी से पूछा कि महाराज सावन सिंह जी ने मुझसे कहा था, "तुझे देने वाला तेरे घर आएगा; क्या आप वही हैं?" मस्ताना जी ने कहा, "मैं वह नहीं हूँ। वह आएगा उसकी इतनी कमाई है अगर दो मुल्कों की तोपें चलती हों और वह हाथ खड़े कर दे तो तोपें भी रूक जाएंगी।" गोली तो एक मामूली सी बात है। गुरु ने बहुत कमाई की होती है यह उसकी दया होती है। मैंने एक भजन में लिखा है जब ये भजन छपेंगे तो आप पढ़ेंगेः

चलण गोलियां ते हथ दे बचोंदा धन्य कृपाल प्यारेया।

गुरु की दया बयान नहीं की जा सकती अगर गुरु ही सेवक की रक्षा न करे, उसे न बचाए, उसकी मदद न करे तो गुरु के बिना सेवक का कौन है? लेकिन गुरु यह सब कुछ पर्दे के पीछे करता है। ऐसे मौके पर जिनका सच्चा प्यार और सच्ची लग्न होती है उन्हें गुरु प्रत्यक्ष भी दर्शन दे देता है।

एक प्रेमीः- *कई बार कोढ़ियों और गरीबों को देखकर मुझे तरस आया, मैंने उन्हें कुछ पैसे दे दिए। उनके साथ मेरा कैसा बंधन बन गया, क्या उस कर्म का बंधन पड़ता है?*

बाबा जीः- गुरु नानकदेव जी ने कहा था कि दान हमेशा सोच समझकर करना चाहिए। कबीर साहब कहते हैंः

गुरु बिन माला फेरदे, गुरु बिन दिन्दे दान।
गुरु बिन दान हराम है, जाए पुच्छो वेद पुराण।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''गुरु किसी के दान का भूखा नहीं होता, उसके पास परमात्मा का दिया हुआ बहुत कुछ होता है। गुरु सेवक पर परोपकार करने के लिए सेवक से दान करवाता है। हम उसकी मेहर को मुफ्त में ही प्राप्त कर लेते हैं। गुरु को ही पता होता है कि सेवक का धन कहाँ लगाकर सफल करना है।''

एक प्रेमीः- *मेरा पहला सवाल यह है कि कौन से मंडल पर पहुँचकर तीसरी आँख खुल जाती है। दूसरा सवाल यह है कि कौन से मंडल पर जाकर हम जीते जी मर जाते हैं और हमें किस तरह पता लगे कि हम यहाँ पर पहुँच गए हैं। तीसरा सवाल यह है कि जिन बच्चों को अपनी तीसरी आँख नजर आती है क्या वे खास बच्चे होते हैं?*

बाबा जीः- जब हम अंदर जाते हैं तब हमें खुद ही पता लग जाता है कि कौन से मंडल पर जाकर आँख खुलती है। जब अंदर जाते हैं तो अपने-आप ही पता लग जाता है कि किस मंडल पर जाकर जीते जी मर जाते हैं, यह बताने की बात नहीं करने की बात है, अभ्यासी खुद ही देख लेता है। हम मिश्री हाथ पर रखकर किसी से सवाल करें कि यह मिश्री मीठी है या कब मीठी लगेगी? सवाल करने की बजाय मिश्री को मुँह में डालकर देखें! जब मिश्री मुँह में डालकर चबाऐंगे तो जुबान पर रखते ही पता चल जाएगा कि मिश्री मीठी है।

इसी तरह जब आप अभ्यास करेंगे अंदर जाएंगे तो आपको खुद ही पता लग जाएगा, आपको मिश्री की तरह दवाई मिली

हुई है; अंदर जाने का साधन और तरीका मिला हुआ है और आपकी मदद करने वाला तैयार बैठा है। जहाँ तक बच्चों का सवाल है आमतौर पर बच्चों के ख्याल टिके होते हैं फैले हुए नहीं होते। तकरीबन बहुत बच्चे इस अभ्यास में कामयाब हो जाते हैं। माता-पिता का ख्याल डोला हुआ होता है वे अंदर कुछ नहीं देखते। कई बार बच्चे अंदर गुरु को प्रकट कर लेते हैं, गुरु से बात कर लेते हैं।

एक प्रेमीः- *इस दुनिया में आत्माओं का आना किसी सीमा में है या आत्माएं आती रहती हैं?*

बाबा जीः- आप अनुराग सागर पढ़ें उसे अच्छी तरह समझें। आपके सवालों के जवाब अनुराग सागर में ही मिल जाएंगे।

एक प्रेमीः- *जब हम ग्रुप में अभ्यास कर रहे होते हैं उस समय कुछ लोग खर्राटे मार रहे होते हैं क्या हमें उन्हें उठा देना चाहिए या खर्राटे मारने देना चाहिए?*

बाबा जीः- मैं आमतौर पर हर ग्रुप में यही कहा करता हूँ कि हर व्यक्ति अपना-अपना कारोबार करता है किसी को दूसरे के काम में तवज्जो नहीं देनी चाहिए। आप अपने काम में लगे रहें अगर कोई खर्राटे मारता है तो वह अपना काम कर रहा है। प्यारे बच्चों! मन एक के साथ तो ठग्गी मार रहा है। जब हम अपनी तवज्जो नाम की तरफ से हटाकर उस बंदे की तरफ देते हैं तो हमारा मन भी ठगा जा रहा होता है।

सतसंगी को अपने आस-पास तवज्जो नहीं देनी चाहिए। अपने आपको तीसरे तिल पर एकाग्र करना चाहिए उसे पता

ही नहीं चलेगा कि मेरे आस-पास क्या हो रहा है। मुझे इस आत्मा के साथ हमदर्दी है अगर मैं उस समय इसे नींद में से हटाऊं तो शायद यह बोल पड़े जिससे आप सबका अभ्यास खराब होगा इसलिए आप इस तरफ तवज्जो न दें।

हमें इससे यही शिक्षा लेनी है कि हमारा मन किसी भी समय अपने हाथ से कोई मौका नहीं जाने देता। भजन के चोरों को नींद, भ्रम, काम, क्रोध ये सब चीजें लिपटी रहती हैं। स्वामी जी महाराज प्यार से कहते हैं:

जो जो चोर भजन के प्राणी से से दुख सहे।
आलस नींद सतावें उनको नित नित भ्रम गहे।
काम क्रोध के धक्के खावें लोभ नदी में डूब मरे।।

एक प्रेमीः- *प्यारे महाराज जी! आप सब कुछ जानते हैं फिर भी मुझे जरूरत महसूस होती है कि मैं आपको अपनी बातें बताऊँ। मुझे आपको ये बातें बतानी चाहिए या सिमरन ही करना चाहिए?*

बाबा जीः- सिमरन ही करना चाहिए, सिमरन सब बातें अपने आप ही बता देगा। शब्द और आत्मा की एक ही भाषा है वहाँ किसी ट्राँसलेटर की जरूरत नहीं, वे अपनी भाषा में खुद ही बात कर लेंगे। किसी कमाई वाले सन्त के लिए दूसरी भाषा में बात कर लेना मामूली बात है लेकिन सन्त यहाँ आकर पर्दापोश बने रहते हैं अंजान की तरह जिंदगी बिताते हैं।

सन्त ऐसी करामात नहीं दिखाते लेकिन जहाँ शब्द और आत्मा की बात होनी है वह उसी की भाषा में होनी है। बहुत से

प्रेमियों के पत्र आते हैं कि आपने अंदर यह कहा लेकिन कभी पत्र में यह नहीं लिखा कि वहाँ पप्पू या एलविया ट्राँसलेटर थे।

जब मैं शुरू में सन्तबानी आश्रम अमेरिका गया तब मैंने पहले संदेश में बताया था कि अंदर शब्द और आत्मा को किसी ट्राँसलेटर की जरूरत नहीं होती। वहाँ इनकी अपनी भाषा है, उसी भाषा में बात होती है। मुझे खुशी है कि परमपिता कृपाल मेरी इस बात को सही कर रहे हैं। आपके मुल्क और दूसरे अन्य मुल्कों से सैंकड़ो पत्र आते हैं कि किस तरह अंदर बात हुई किस तरह हमें सपने में यह बताया या किस तरह आपने ऑपरेशन के समय संभाल की।

एक प्रेमीः- *हम अभ्यास के दौरान जो बैठक बनाते है उसका अभ्यास के ऊपर क्या असर पड़ता है? अभ्यास चौंकड़ी मारकर बैठने से या कुर्सी पर बैठने से बेहतर होता है?*

बाबा जीः- आप जिस पोजिशन में ज्यादा देर आराम से बैठ सकें जल्दी हिलना न पड़े आप वह पोजिशन इख्तियार करें। सबसे आरामदायक कुदरती पोजिशन चौंकड़ी मारकर बैठना ही अच्छा है।

एक प्रेमीः- *ऐसा क्यों है कि आदमी के चोला छोड़ने के तीसरे दिन बाद ही उसका संस्कार किया जाता है?*

बाबा जीः- देखो भई! यह सोचने की बात है। यह अपने-अपने मुल्क और समाजों के रीति-रिवाज के अनुसार होता है। हिन्दुस्तान में तीसरे दिन तो क्या कोई तीन घंटे रखकर भी खुश नहीं होता।

एक प्रेमीः- *क्या यह संभव है कि जब हम अंदर जाते हैं तो आगे बढ़ने से पहले हमें किसी जगह कुछ समय के लिए रोका जाए फिर बाद में आगे ले जाया जाए?*

बाबा जीः- यह समझने वाली बात है। यह प्रेमी की एकाग्रता पर मुनस्सर होता है अगर आपका सिमरन, प्यार और लग्न के साथ चलता है आप तीसरे तिल पर एकाग्र होने लग जाते हैं तो जिस तरह गोली चलती है उसी तरह आत्मा ऊपर चढ़ती है। आत्मा को रोकने वाले आपके ख्याल और आपके कर्म ही हैं।

एक प्रेमीः- *अगर नींद के दौरान कभी बिरजपात हो जाए तो उसका मतलब यह है कि कामवासना के संघर्ष में हमारी जीत नजदीक आ गई है या जीत बहुत दूर है?*

बाबा जीः- देखो भई! जिनकी गहरी नींद होती है उन्हें यह बीमारी होती है, इसमें जीत हार का कोई मतलब नहीं होता। बचपन की गलतियों की वजह से इंसान सारी जिंदगी परेशान रहता है लेकिन अभ्यासी का कभी भी सपने में बिरज नहीं जाएगा। गुरु नानकदेव जी ने कहा थाः

सुपने बिंद न देही झरना तिस पांखडी जरा न मरना।

ऐसी आत्माएं भी संसार में आती हैं जिनकी देही सपने में भी नहीं झरती उनके ऊपर माया का कोई असर नहीं होता। स्त्री के लिए मर्द लुभावनी माया है और मर्द के लिए स्त्री लुभावनी माया है। यही चीजें इसे फँसाकर बैठी हैं लेकिन ऐसी आत्माएं भी संसार में आती हैं जिनके ऊपर इन चीजों का कोई असर नहीं होता।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भक्ति का तोहफा

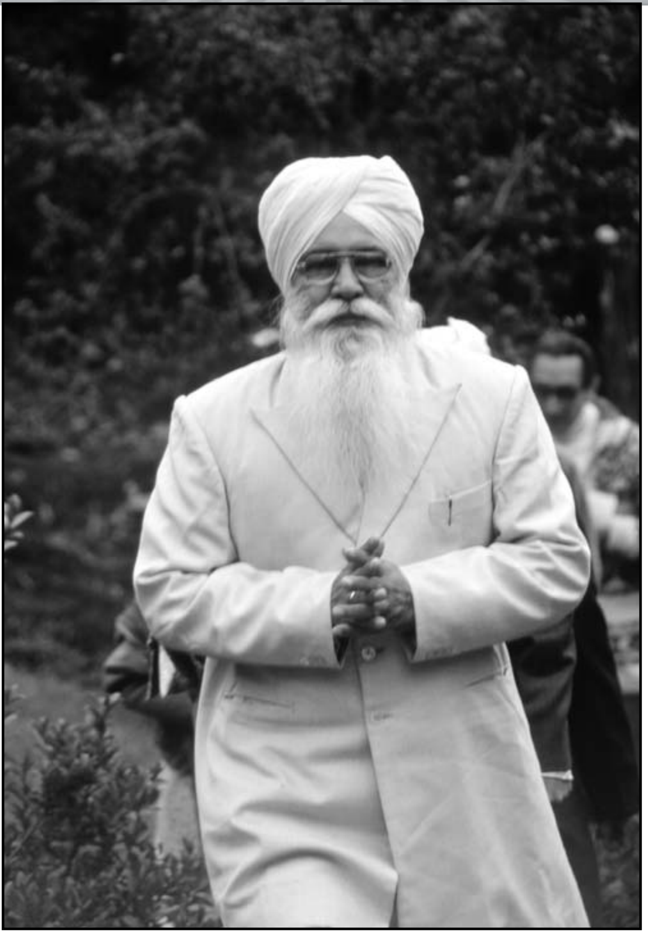

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है। जिन्होंने हम गरीब आत्माओं पर दया की और अपनी भक्ति का दान दिया। प्यारेयो! परमात्मा की भक्ति का दान कभी खत्म नहीं होता चाहे आप इसे कितना भी बाँट दें। भक्ति के धन को चोर चुरा

नहीं सकता, आग जला नहीं सकती। कोई धोखेबाज परमात्मा की भक्ति के साथ धोखा नहीं कर सकता।

हमें परमात्मा की भक्ति का दान गुरु से मिलता है। गुरु इस दुनिया में **भक्ति का तोहफा** लेकर आते हैं। वे हमें यह तोहफा देकर अहसान भी नहीं जताते लेकिन सवाल यह है कि हम परमात्मा की **भक्ति के तोहफे** को कितना हजम कर सकते हैं?

गुरु अर्जनदेव जी ने इस तोहफे को जीवन का दान कहा है। गुरु हमारी आत्मा को परमपिता परमात्मा के साथ जोड़ते हैं। गुरु हमें नामदान के जरिये परमात्मा से मिलवाते हैं। गुरु हमें अपने जीवन की कमाई का दान देकर हमसे भक्ति करवाते हैं।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''वही जीव भाग्यशाली हैं जो सुबह जल्दी उठकर अपने ध्यान को गुरु के चरणों में जोड़ते हैं।''

जब ग्रुप यहाँ आता है तो मैं शुरुआत में और आखिरी दिन उन आत्माओं को कुछ चीजें याद करवाया करता हूँ कि भजन पर बैठने से पहले पाँच पवित्र नामों को याद कर लें अगर कोई बहुत जरूरी काम है तो जल्दी से उसे खत्म कर लें फिर अभ्यास में बैठें ताकि उस काम की याद आपको परेशान न करे। कभी भी भजन-अभ्यास को बोझ न समझें इसे प्रेम-प्यार से करें। हम जो काम प्रेम-प्यार से करते हैं वह स्वीकार होता है।

प्यारेयो! यह बहाना न बनाएं कि हम घर-परिवार वाले हैं, हम परमात्मा की भक्ति कैसे कर सकते हैं? कई ऐसे गुरु हैं जिन्होंने पारिवारिक जीवन बिताया है, पारिवारिक जीवन का मतलब अपनी जीविका अपने आप कमाना है। हमें अपने कर्मों के मुताबिक

जो जिम्मेवारियाँ मिली हैं उन्हें पूरा करना है। हमने सबसे पहले गुरु का ध्यान करना है। हमने गुरु से जो वायदा किया है उसे निभाना है। सुबह जल्दी उठें और गुरु के साथ किए गए वायदे के मुताबिक सबसे पहले अपने अभ्यास पर ध्यान दें।

हर आत्मा माता के गर्भ में उल्टी लटकी होती है, वहाँ हिल-डुल नहीं सकती। वह तंग और अँधेरी जगह होती है। वहाँ आत्मा नाम के सहारे जीती है। वहाँ आत्मा को हर साँस के साथ नाम का सहारा मिलता है। वहाँ आत्मा परमपिता परमात्मा के आगे अरदास करती है, ''हे परमात्मा! मुझे इस जेल से बाहर निकालें। मैं आपसे वायदा करती हूँ कि मैं अपने समय का दसवां हिस्सा और मेरे पास जो भी होगा उसका दसवां हिस्सा आपको दूंगी।''

प्रेमी अपनी कमाई का दसवां हिस्सा दे देते हैं। जिस तरह किसान जब फसल काटता है तो उसका दसवां हिस्सा गुरु के लिए देता है। कुछ लोगों को जब तनख्वाह मिलती है तो वे अपनी तनख्वाह का दसवां हिस्सा निकालते हैं। अक्सर प्रेमी अपनी कमाई का दसवां हिस्सा गुरु के लिए निकालते हैं लेकिन हजारों में शायद ही कोई ऐसा विरला प्रेमी मिलेगा जो अपने समय का दसवां हिस्सा भजन-अभ्यास के लिए निकालता हो। जब हम माता के गर्भ में फँसे हुए थे तब हमने परमात्मा के साथ ढाई घंटे भजन-अभ्यास करने का वायदा किया था, हमें वह वायदा पूरा करना चाहिए।

महाराज कृपाल की हिदायतों के मुताबिक आपको डायरी रखनी चाहिए, भजन-अभ्यास करके अपना जीवन बनाना चाहिए। आँखें बंद करके अपना सिमरन शुरू करें।

***

01 दिसम्बर 1983

धन्य अजायब

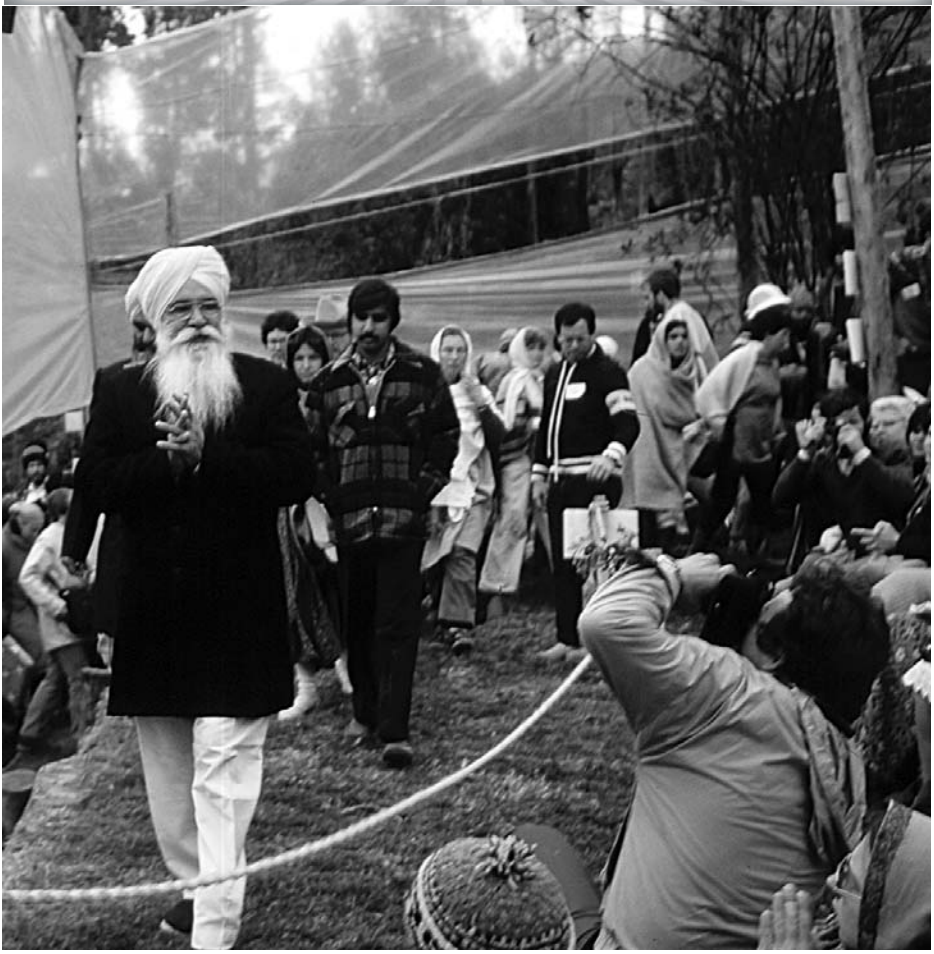

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम:

02 से 06 फरवरी 2017

03 मार्च से 05 मार्च 2017

31 मार्च 01 व 02 अप्रैल 2017